

DPN 5775

Title : धारणी पुचः DHĀRANĪ PUCĀH

Run. No. 6466

Cat. No.

Micro. No.

Subject धारणी dhārani

Religion : Hindu / Bauddha ✓

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 20.5 x 6.7

Folios 18

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl. ✓

(missing 8, - 11)
Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

जणेशरत्नशाक्य
Janaśa Ratna Śākya

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
ॐ नमो भगवते ध्यात्वा श्री कृष्णाय नमः ॥ देवर्षि रवि स्वस्ति च, सौम्य हृषीकेश प्रदा,
वसुंधरी वसुधावत, वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

Cms.

5

10

15

20

समाप्ति / Colophon

इति भार्य ग्रह मातृक, तत्र धातुली समाप्त ॥ ॥ आदर्श पुस्तकं तद्वद्दीयावीतं मया ..

0 cmts.

5

10

15

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥
 वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥
 वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥
 वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥
 वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥

विद्याविष्णुनामस्तोत्रम् ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥
 वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥
 वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥
 वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥
 वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥ वसुदेवाय नमः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ यदहं न कर्तुं शक्यं तत्तु यत्तु न कर्तुं शक्यं तत्तु यत्तु न कर्तुं शक्यं ॥
 अथ वासि मसीय नो ॥ सय जा विस्म वा सव क ॥ यिद स्य दय वा स ॥ ४४ ॥ यय वा नी यी यद ही नो वि य वा
 नी य क ल व आ द र्य मय जा य न ॥ ४५ ॥ क रु मि ह्य लं प्रा का ॥ ४६ ॥ य ह्य या य स वा व र्ग ॥ ४७ ॥
 आय ही व ह्य न धा व ही क र्ग स मा य ॥ ४८ ॥ य ध म्मो ला दि ॥ ४९ ॥ उ न मा रु म व
 नो ॥ ५० ॥ आय व द्वा वि दान न ॥ न मा व द्वा वि ॥ न व न स्या ॥ न म वा स ॥ न म य रु म दान ॥ ५१ ॥ य द म य

विरु नी स्या ॥ स घ ड ली न व द म य म धि स्या स व द या वि ह्य व ह्य न मा व न ॥ ५२ ॥ य द रु म धि स मा य न ॥ ५३ ॥
 न मा व द या वि व ह्य न मा व न ॥ स घ व ह्य न मा व न ॥ स घ व ह्य न मा व न ॥ स घ व ह्य न मा व न ॥ स घ व ह्य न मा व न ॥
 वि गृ ह्य म रु शी स र्ग ह्य द ह्य र्ग स र्ग य प न डि र्ग स र्ग स त्व वि दाय क न र्ग स र्ग स त्व मा द न क र्ग स र्ग वि
 दाय क न र्ग स र्ग क म्मो वि श्व म न क र्ग ॥ स र्ग क म्मो वि दाय न क र्ग स र्ग य द्वा ला द क र्ग स र्ग य द्वा वि मा द न
 क र्ग स र्ग रु म य क न र्ग ॥ स र्ग वि दाय म रु क न य न र्ग आ सि स्यो नी स ह्यो क र्ग अ सि ह्यो नी ॥ वा य ना स न

साकनी, केवाडकीमहाज्यादि ॥ दिवाकन धरुषधी, माकनी सर्ववृक्षोर्णी ॥ वनधाकधवधनी, धन
 गनाधनगनावीनीदवी, सावासाववीवर्जनीशावनयकावनगाध दीधनीकडाकदनीरिधुः
 नीसवेगावीर्णी, सययागावकाहलीशावक्रमधीवदमागाध, दुकनगुक्रयाहीनी, सवधवर्णः
 नीवीसावाकी वडवक्रवीहानीही, कथागनीमहावली वकीनीधमेधवीही वमेधकधवीः

वज्र२ गथावक्र२ कथमंदनीसवजायसाहाभाउंरुहलीनी २ गृह २ वानू२ मित्रि२ वृ२ वल२ वा
 व२ वज्रविजयाय ॥ साहाभाउं वज्रकिलिकिलिलायसाहाभाउं कट२ मठ२ चठ२ माठनयुमाठनार
 साहाभाउं वल२ विवल२ रुषल२ गालय२ वज्रवीदावनायसाहाभाउं छिन्द२ र्छिन्द२ महाकिलि
 किलायसाहाभाउं वध्वं२ महाकावकिलिकिलिलायसाहाभाउं वल२ वध्वलिकिलिलायसाहा
 वाध्व२ वज्रकिलिकिलायसाहाभाउं वन२ वज्रधलायसाहाभाउं वज्रयकन२ वज्रयहंजनायः

[illegible][illegible]

[illegible]

किं॥ ॐ मा नि म नु य द न नी रु ग व कि ४१ न य क्षा रा उं य वा वा म मि त ड द य मा मि ॥ व न म मि त्रु क म मि
 म क म मि त्रु ल न मि गु ल्म न मि चि व न म मि ४२ म ह चि व न म मि ॥ अ न धा न म मि ॥ स्वा हा भा अ य न
 डि ना मा चि चि ना म द व ना र्दी य र्थ नी ल्म य य धा ड य र्थ नी ल्म य य ४३ वा ड क न ना म नी ल्म य य ॥ ध्व जः
 न य द ना म नी ल्म य य ॥ रु कि रु ना म नी ल्म य य ॥ वी ल रु ना म नी ल्म य य ४४ अग्नि रु य ना म नी ल्म य य ॥ द द क रु य
 ना म नी ल्म य य ॥ स व य ना धि क य र्थ नि रु रु य द ना म नी ल्म य य ॥ अ क न धू र्ण अ ना दू ल य ॥ मू र्छ म मू र्छि

गोमनक ॥ याद्विकामनक ॥ सद्योगामनक ॥ सद्योगामनक ॥ गद्यथा ॥ उं आलासा मल्लालासला मूळि
 नि न्मीमूळाननक सद्योगामि सद्यविवाजामि सद्यसत्त्वाना श्री सद्यरुयायदवावसा सादा आ नमा
 वल्लुयाय ॥ उं नमारुवला आ यो ना नी वी दव ना ये शा ग या रु द य मा व रु यि यामि ॥ गद्यथा ॥ उं २४
 यला नी वला ली वला रु मुखि सद्यदृष्ट प्रदृष्ट न वदु मुखि वद्य २ खादा ॥ उं मा व नी ला रु ॥ उं वन वन व
 को नी वदा नी श्वला ली वला रु मुखि सद्यदृष्ट प्रदृष्ट ना व य रु मुखि वद्य २ खादा ॥ ॥ श्री वी ॥

न नि मये मानवीनाम द्वावही समा यक्ष ॥ ॥ यक्ष मो लादि ॥ ॥ उं नमारुगवले आयेगुदमा
 वृक्षाय ॥ उर्वमया ॥ उमका सा समय रुगवान् अदक वली महानग यो मिन क द व ना ग य द
 गद्यथा ॥ उर्वमया ॥ उमका सा समय रुगवान् अदक वली महानग यो मिन क द व ना ग य द
 रु क रु गिल लक्ष्मि विहा गि रि न रु गदि कि रु य मा ना मला वज समया ली का ला धि स ना धि रि ग
 सिदा म न वि रु गि स ॥ ॥ श्री न क वा धि स व स ग रु अ ग य ॥ ॥ वज यानि न उ ना म वा धि स व न म द

वना॥ वज्रवल्गुनच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥ वज्रसनमच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥
 ऊवायकृत् नच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥ वज्रविद्रुमनच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥
 वज्रालिका नच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥ जाकिवकु नच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥
 जूवलाकि नच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥ समकावलाकि नच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥
 धिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥ यमेककु नच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥ स्वाकहीयानच नाम

वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥ विकसिकवकु नच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥ यमेगुरु नच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥
 धिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥ यमेरुक्त नच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥ यमेनकु नच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥
 वनमः कामसत्त्व नमः॥ दीयकच नच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥ मीरुहीयानच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥
 कामसत्त्व नमः॥ मेरीनच नाम वाधिसत्त्व नमः कामसत्त्व नमः॥ उर्वयमुखेवही तावधिसत्त्व नमः॥
 यमेरुक्त तावधिसत्त्व नमः॥ ॥ आदीकल्यादी मध्याकल्यादी यथेवासाक कल्यादी

॥ जनेकवर्षयत्रियुं ह्येव यदानीं वक्तव्यं संप्रकाशयामि ॥ १ ॥ त्रिनामनिमलादिः
 ॥ कालनामधर्मयेशोर्यदक्षयामि ॥ २ ॥ अथ स्वतन्त्रगवान् वज्रयादिसंस्तुत्य मधुलमव
 ॥ कामनीद्वयं ब्रह्माद्विज्ञाननरुगवर्कं नूनकसमर्हं संप्रदायं वीकृष्य यत्नमयुक्तानि
 ॥ स्वयं स्वर्गे न च नाम वज्रययकमायुः प्रलयाय वज्रां जालिकृत्वा स्वद्वयप्रतिष्ठाय रुग
 ॥ वक्तुमर्हं वदन् ॥ गृहाक्षरुगवा मग्रहं नृयाश्च नोदा नोद नृयाश्च कृत्वा कालं नृयाश्च सखाः

॥ नादिह श्रुयामि ॥ कथां चिन्तयामासं यदानीं वक्तव्यं ॥ १ ॥ कथां चिन्तयामासं यदानीं वक्तव्यं ॥ २ ॥
 ॥ नादिह श्रुयामि ॥ कथां चिन्तयामासं यदानीं वक्तव्यं ॥ १ ॥ कथां चिन्तयामासं यदानीं वक्तव्यं ॥ २ ॥
 ॥ नादिह श्रुयामि ॥ कथां चिन्तयामासं यदानीं वक्तव्यं ॥ १ ॥ कथां चिन्तयामासं यदानीं वक्तव्यं ॥ २ ॥
 ॥ नादिह श्रुयामि ॥ कथां चिन्तयामासं यदानीं वक्तव्यं ॥ १ ॥ कथां चिन्तयामासं यदानीं वक्तव्यं ॥ २ ॥
 ॥ नादिह श्रुयामि ॥ कथां चिन्तयामासं यदानीं वक्तव्यं ॥ १ ॥ कथां चिन्तयामासं यदानीं वक्तव्यं ॥ २ ॥

मयहौकाही मृगयानां माने कुलाकारिहिवहीनीगुच्चाकिगुच्चा रवीदिवायूजामय
 ॥ यथैव यथानक मेव श्रेष्ठं दनसर्धवीय धानुकुचयानि कयहाः यूजिमायानिय
 निरुहं ता कजमानिना दवाहमसनावीविकनवा (७) वमान्या ॥ यत्तस्य वाकसाः श्वव य
 नाः श्ववसर्वे समयनिकुभार्या मरुतं नृगह कजसायुजाकृवायवनामि मन्कावायियथाः
 ॥ कर्म ॥ ॥ अथखलु गवान् ॥ कामनिरुथागना खरुदयाला बूधा विविदिन नामल

॥ नक्कीनिश्वायेगहानीमस्त्रिषवः यनिसम ॥ अथखलु गवान् ॥ देवसम्यक्कादित्यादयाडवृयीः रुगवः
 माकमनिरुथागनामरु सवेयूजानि ४ यूजयित्वायुवग्याहानुकिनियमककाजिलियुगोदत्वारुग
 दवाग ॥ अनुगृह गावयै रुगवगा कश्चागना मरुके सैम्यकं दूहाय ॥ कयभाय नुरुगवान् गथा
 प्रमेययोयं यनवयै सामग्री रुखा धमय योयं धमरुतनवाय वकीक्याम ४ गुर्धियादिगाही ॥
 प्रयावर्ण ॥ विस्वस्ययर्ण दधुयविहानं वरुवावेहाव विखरुर्ण विषवाहनं धीमावः

अकथामशा अथखलु गगनात् क्षामुनि कथा गगनादानी यजामक ध्वजाय नमः ॥
 अथ रुद्रादिशास्त्रायादश्च गन्धमलु चकृत्वा यमेत्या कलि कासु द्वादशागु वयमा र्णवा
 ॥ निःक्षारु र्णकरो यो ॥ गत्या तै र्वा विवसि नय गोया विवि कथमशा दव साय न गाय स नृयधः
 जाया लिक क सिधु व व ले सम क र्ज गजा मालि न विग्रह ॥ ॥ मघा खा नाय आद ह्या यनः
 ॥ स्वाहा ॥ युधेदल (यदा मृग वि क्र माय स्वाहा ही की कृ मा लाय स्वाहा ॥ अग्निदल ॥ न की ग कृ मा न

यनमः स्वाहा ॥ दक्षिणदल ॥ उं वाजयं वृक्षाय वि न व ऊं यनमः ॥ स्वाहा ॥ नमः स्वाहा ॥ उं लादिग
 वल्गु यमनि मोय वृक्षाय वि न व ऊं यनमः ॥ स्वाहा ॥ दक्षिणदल ॥ उं अमरा के माय ह्वा धिय कथनमः स्वा
 हा वायुदल ॥ उं कृष्ण अर्य हानि ह्वा वायनमः स्वाहा ॥ उं रुद्रदल ॥ उं रुद्रा नमः स्वाहा ॥ उं रुद्रा नमः स्वाहा ॥
 ॥ वां रुं अमृकयु यायनमः स्वाहा ॥ वा रु वनमः स्वाहा ॥ ॥ ॥ नदल ॥ उं धर्मी रुमान काय अ
 ॥ मः स्वाहा ॥ ॥ मलु सयुदायुधे द्वा व दक्षिण गगनात् दक्षिण द्वा व दक्षिण यानि यामि मदा

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

॥४॥ धृष्ट्या ॥ ॥ अदिनाय स्वाहा ॥ ४॥ माय स्वाहा ॥ धनवीमनाय स्वाः
 ॥ ४॥ वृद्धाय स्वाहा ॥ वृद्धस्य नय स्वाहा ॥ धृष्ट्या स्वाहा ॥ धानेन वाय स्वाहा ॥ नारुद स्वाहा ॥
 कनक स्वाहा ॥ वृद्धाय स्वाहा ॥ वृद्धधनाय स्वाहा ॥ यमधनाय स्वाहा ॥ क्रमानाय स्वाहा ॥ सवेगदे २
 स्वाहा ॥ सवेन कुरु स्वाहा ॥ सवेन यदव स्वाहा ॥ उंसवे विषईईईईईई स्वाहा ॥
 ॥ मानि वृद्धया ॥ एगदमा नृकाना मध्वी मनु यदा ही कारि कमाया ॥ धृष्ट्या यद सफा ॥

मिमात्र ॥ ४॥ धाया धिवा ॥ ४॥ स्वाहा वव वृद्धी गदान् पूजयि त्वादि तदि न सयदा वान् वा वयि
 स्वाकुरु यष्टुमाया मक्षनार्थं यष्टुत्वा डया विरु नते अक्षानार्थं वा वयन कस्य नवन वनिवः
 योही मृग्यर्यरु विथानि ॥ ४॥ धाया वन रुद्रयि ठा र्यरु विथानि ॥ ४॥ जामो जामो जामि सः
 गरु विथानि ॥ सवेगदा ४ यष्टिना ध्वरु विथानि ॥ सवेगद ॥ ४॥ मिमं ववादा स्थानि ॥
 ॥ अदिना दया सा धृष्ट्या नानि नि कृत्वा यदा म्या नदिना जह वन् ॥ ॥ ४॥

[illegible]